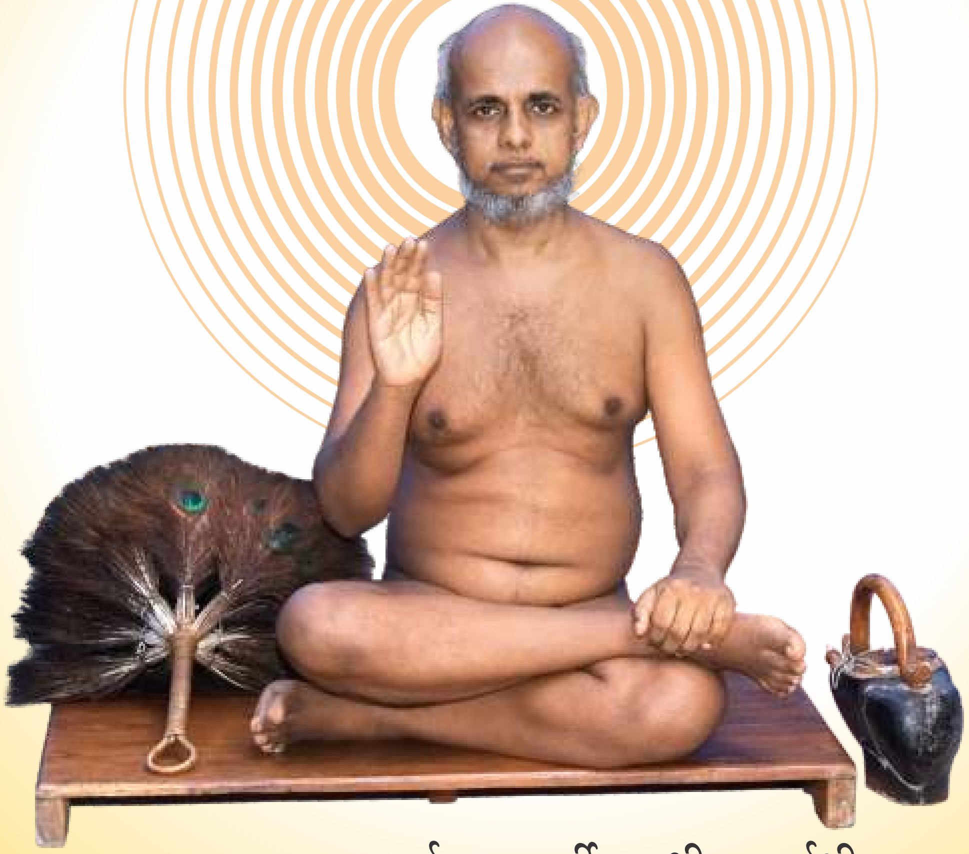

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती पट्टाधीशाचार्यश्री

सुविधिसागर जी महाराज

के

50 वें जन्मदिवस के पावन अवसर पर

सुविधि–परिवार के द्वारा आयोजित

जिनवाणी-महोत्सव

सहस्रग्रन्थसंग्रह

* जन्मदिवस 19–03–1971 * मुनिदीक्षा–11–05–1989 * आचार्यपद– 20–06–2004

पट्टाधीशपद– 24–12–2010 (20–06–2004 को की गई उद्घोषणा के अनुसार)

परम पूज्य आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज के द्वारा की गई उद्घोषणाः–

हमारी समाधि के पश्चात् आपको इस संघ के संचालकपद पर नियुक्त करते हैं।

(अंकलीकर वाणी–जुलाई 2004) (अक्षयज्योति–अक्तूबर 2004)

सर्वविघ्नहर श्री शान्तिनाथ विधान

रचयित्री : पूज्या गणिनी आर्यिकाश्री ज्ञानमती माताजी

प्रकाशक
दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान
हस्तिनापुर–मेरठ (उत्तरप्रदेश)

(परम्परानायक)

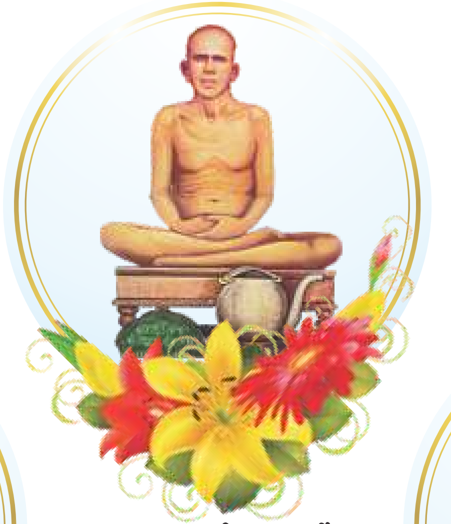

परम पूज्य चारित्र–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री आदिसागर जी महाराज
(अंकलीकर)

(द्वितीय पट्टाधीश)

परम पूज्य तीर्थभक्त–शिरोमणि,
आचार्यश्री महावीरकीर्ति जी महाराज

(तृतीय पट्टाधीश)

परम पूज्य सिद्धान्त–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज

(चतुर्थ पट्टाधीश)

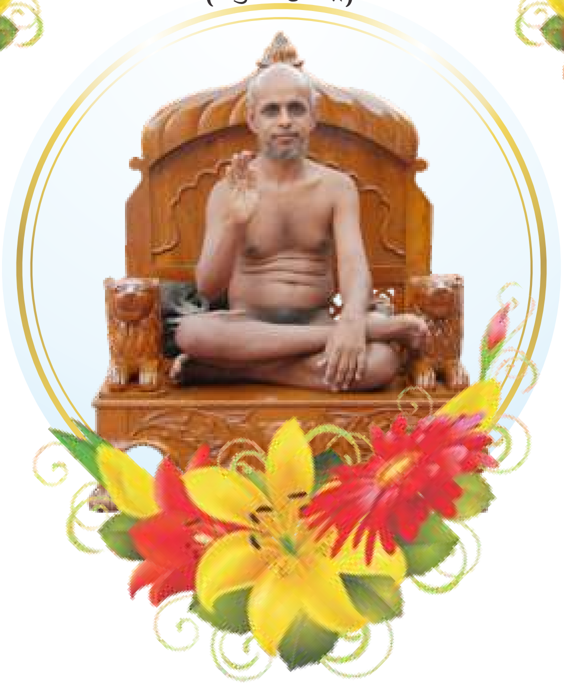

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती, आचार्यश्री सुविधिसागर जी महाराज

दिगम्बर साधु निरन्तर पगविहार करते रहते हैं। ग्रन्थभण्डार को साथ में रख कर विहार करना अशक्यप्राय: होता है। फलत: उनको ग्रन्थों के सन्दर्भ देखने में असुविधा होती है। उनकी सुविधा के लिये इस कोश का निर्माण किया गया है। इस कोश के निर्माण में किसी भी प्रकार का व्यापारिक हेतु नहीं है।

आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न श्रावकबन्धुओं से निवेदन है कि वे ग्रन्थ का विक्रय कर अध्ययन करने की परम्परा को कायम रखें।

मुखपृष्ठ पर हमने ग्रन्थकर्त्ता, अनुवादक, सम्पादक, प्रकाशक आदि के नाम दिये हैं। किसी संस्थान का कर्तुत्व हमने लुप्त नहीं किया है।

इस कोश के लिये आवश्यक ग्रन्थ हमें अनेक स्रोतों से प्राप्त हुये हैं। हम उन सभी का आभार मानते हैं।

सुविधि–परिवार

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 446
ISBN-978-93-84003-55-5

सर्वविघ्नहर श्री शांतिनाथ विधान

–रचयित्री –

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी,
दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत
परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
श्री ज्ञानमती माताजी

परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा घोषित 'श्री गौतम गणधर वर्ष 2014–15 के अन्तर्गत आर्यिका श्री रत्नमती माताजी के जन्म शताब्दी महोत्सव मगसिर कृ. पंचमी (11 नवम्बर 2014) के अवसर पर प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website : www.jambudweep.org
www.encyclopediaofjainism.com
E-mail : jambudweeptirth@gmail.com
Facebook : jaintirthjambudweep

प्रथम संस्करण	वीर नि. सं. 2541, मगसिर कृ. पंचमी	मूल्य
1100 प्रतियाँ	11 नवम्बर 2014 मंगलवार	20/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएँ भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी
(दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी
(पीएच.डी. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: निर्देशक एवं सम्पादक:–

कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

–: प्रबंध सम्पादक :–

जीवन प्रकाश जैन

—————— सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन ——————

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

—कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

ॐ नमो मंगलं कुर्यात्, ह्रीं नमश्चापि मंगलम्।
मोक्षबीजं महामंत्रं, अर्हं नमः सुमंगलम्।।

वर्तमान में—कलियुग में आज घर गृहस्थी में अनेक समस्याएँ आ जाती हैं जिससे अक्सर लोग माताजी के पास आते हैं और पूज्य माताजी से निवेदन करते हैं माताजी हमारे ऊपर बहुत संकट आया है आप ही इसे दूर कर सकती हैं। माताजी इन्हें यंत्र—मंत्र बता देती हैं और कहती हैं आप इसे श्रद्धापूर्वक करिए आपका संकट अवश्य दूर होगा।

इसके साथ ही माताजी एक बात प्रायः सबसे कहती हैं कि घर गृहस्थी में रहते हुए भी यदि आप लोग समय—समय पर पूजा विधान करते रहें, प्रतिदिन भगवान का दर्शन करें, अभिषेक, पूजन आदि करें तो संकट नहीं आएगा। आचार्यों ने शास्त्रों में श्रावक के षट् कर्त्तव्य बताए हैं—

देवपूजा—गुरुपास्तिः स्वाध्यायः संयमस्तपः।
दानं चेति गृहस्थानां षट्कर्माणि दिने दिने।।

अर्थात् देवपूजा, गुरुओं की उपासना, स्वाध्याय, संयम, तप और दान ये श्रावक के छह आवश्यक हैं। इन्हें प्रतिदिन करने से श्रावक धर्म सार्थक होता है।

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी चारित्र चन्द्रिका, युगप्रवर्तिका, राष्ट्रगौरव परम पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने 400 ग्रंथों की रचना करके एक कीर्तिमान स्थापित किया है। 50 से अधिक विधान पूज्य माताजी के प्रकाशित हो चुके हैं और 50 विधान अभी अप्रकाशित हैं वे भी शीघ्र ही प्रकाशित हो रहे हैं। यह 'सर्वविघ्नहर श्री शांतिनाथ विधान' पूज्य माताजी ने रचकर प्रदान किया है। यह विधान सभी के जीवन में सभी विघ्नों को दूर करके सुख, शान्ति, समृद्धि को दिलाए यही मंगल भावना है।

पूज्य माताजी स्वस्थ रहें, दीर्घायु प्राप्त करें, वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला उत्तरोत्तर उन्नति को प्राप्त हो, यही जिनेन्द्रदेव से मंगल कामना है।

प्रस्तावना

—प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जैनधर्म के सोलहवें तीर्थंकर, बारहवें कामदेव एवं पंचम चक्रवर्ती इन तीन पद से समन्वित, हस्तिनापुर में जन्में श्री शांतिनाथ तीर्थंकर का यह विधान है। सर्व विघ्न को दूर करने वाले एवं शांति को प्रदान करने वाले श्री शांतिनाथ भगवान ने ज्येष्ठ वदी चौदस को जन्म लिया, ज्येष्ठ वदी चौदस को ही दीक्षा ली और ज्येष्ठ वदी चौदस को ही मोक्ष को प्राप्त किया। एक ही तिथि में भगवान के 3 कल्याणक हुए हैं।

इस 'सर्वविघ्नहर शांतिनाथ विधान' में पूज्य माताजी ने सर्वप्रथम मंगलाचरण लिखते हुए स्वरचित श्री शांतिनाथ भगवान की स्तुति दी है। उसके बाद अर्हंत पूजा दी है। अर्हंत पूजा के बाद श्री शांतिनाथ पूजा की स्थापना में लिखा है—

जो गणधरों से वंद्य हैं, बारह सभा के नाथ हैं।
निज भक्त को संसार में, करते सदैव सनाथ हैं।।
उन शांतिनाथ जिनेन्द्र को, मैं आज पूजूँ भाव से।
निज आत्म निधि की प्राप्ति हो, अतएव थापूँ चाव से।।

अर्थात् गणधरों से वंद्यनीय, बारह सभा के नाथ तीर्थंकर शांतिनाथ अपने भक्तों को सदैव सनाथ करते हैं, ऐसे उन शांतिनाथ की पूजा करके मैं भी अपनी आत्मनिधि को प्राप्त कर लूँ ऐसी भावना भाते रहना चाहिए।

श्री शांतिनाथ की पूजा में पंचकल्याणक के अर्घ्य एवं भगवान के 1008 नामों में से 108 नाम मंत्र के 108 अर्घ्य हैं। उसके बाद जयमाला है। जयमाला में एक-एक शब्द मोती की माला के समान है, जिन्हें पढ़कर भगवान के केवलज्ञान होने पर जो अतिशय, जो वैभव प्रगट होता है, उसका ज्ञान होता है। पूज्य माताजी ने लिखा है कि अनंतदर्शन, अनंतज्ञान, अनंतसुख और अनंतवीर्य इन चार अनंत चतुष्टय के स्वामी श्री शांतिनाथ भगवान का अन्तरंग का वैभव अनुपम गुणमय है और बाहर का वैभव—समवसरण की रचना, जिसका वर्णन जब गणधर देव करते हैं, तो मनःपर्ययज्ञानी भी सुनकर थक जाते हैं।

जयमाला के बाद प्रशस्ति है। इसके बाद भगवान शांतिनाथ की जन्मभूमि हस्तिनापुर तीर्थ की पूजा है। अंत में भगवान शांतिनाथ की आरती एवं हस्तिनापुर तीर्थ की आरती है। **इस प्रकार इस विधान में 3 पूजा, 108 अर्घ्य, 1 पूर्णार्घ्य और 3 जयमाला है।** यह विधान सभी के जीवन में विघ्नों को दूर कर सुख, शांति, समृद्धि को प्रदान करते हुए एक दिन शाश्वत सुख को प्राप्त करावे, यही मंगल भावना है।

दो शब्द

—ब्र. कु. बीना जैन (संघस्थ)

श्री विश्वसेननृपजो भुवि शांतिकारी।
शांत्यैषिणां वितनुते किल पूर्णशांतिं।।
ऐरावती सुतवती भुवनैकमाता।
देवैर्नुता जगति मंगलमातनोतु।।

भगवान महावीर के शासनकाल में बीसवीं, इक्कीसवीं शताब्दी में जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी युगप्रवर्तिका, चारित्र चन्द्रिका, आर्यिका शिरोमणि परम पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने जिनधर्म, जिनागम की विशेष प्रभावना करते हुए अब तक 400 ग्रंथों का लेखन आगम के अनुसार किया है।

आज के भौतिक युग में लोगों को धर्ममार्ग में लगाने के लिए भगवान की भक्ति, पूजा विधान आदि सशक्त माध्यम है। जिनागम के चारों अनुयोगों का तलस्पर्शी ज्ञान रखने वाली पूज्य माताजी के पूजा विधानों में स्वाध्याय का पूरा विषय रहता है। माताजी का एक–एक शब्द जिनवाणी है। माताजी आगम से हटकर न कभी प्रवचन करती हैं और न कभी लेखनी चलाती हैं।

बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शान्तिसागर जी महाराज का 3 बार दर्शन करने वाली, उनसे अनुभव ज्ञान प्राप्त करने वाली और उनके प्रथम पट्टशिष्य आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से आर्यिका दीक्षा को प्राप्त करने वाली पूज्य माताजी की शिष्या का सौभाग्य जो मुझे मिला है, मैं समझती हूँ यह कई जन्मों के पुण्य से ही प्राप्त हुआ है।

पूज्य माताजी के चरण सानिध्य में रहकर, उनसे ज्ञानामृत का पान करते हुए मैं भी स्त्री पर्याय का छेदकर देवपद, मोक्षपद को प्राप्त करूँ यही मंगल भावना है। पूज्य माताजी स्वस्थ रहें, दीर्घायु प्राप्त करें, जिनेन्द्रदेव से यही मंगल कामना करते हुए मैं पूज्य माताजी के पावन चरणों में कोटि–कोटि नमन करती हूँ।

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान–टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि–आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991, (22 अक्टूबर सन् 1934)

जाति–अग्रवाल दि. जैन, **गोत्र**–गोयल, **नाम**–कु. मैना

माता-पिता–श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत–ई. सन् 1952, बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन

क्षुल्लिका दीक्षा–चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से। नाम-क्षुल्लिका वीरमती

आर्यिका दीक्षा–वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व–अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं 400 ग्रंथों की लेखिका।

डी.लिट्. की मानद उपाधि–सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा एवं तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद द्वारा 8 अप्रैल 2012 को "डी.लिट्." की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा–हस्तिनापुर में जंबूद्वीप, तेरहद्वीप, तीनलोक आदि रचनाओं के निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा-भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा, महावीर जी तीर्थ पर महावीर धाम में पंचबालयति मंदिर, शिर्डी में ज्ञानतीर्थ, सम्मेदशिखर में आचार्य श्री शांतिसागर धाम इत्यादि।

महोत्सव प्रेरणा–पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डल विधान का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि। विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।

शैक्षणिक प्रेरणा–'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार, ऑनलाइन जैन इनसाइक्लोपीडिया आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा–जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान-संक्षिप्त परिचय

—कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान की स्थापना पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से सन् 1972 में राजधानी दिल्ली में हुई थी। संस्थान का मुख्य कार्यालय सन् 1974 से हस्तिनापुर में प्रारंभ हुआ। इस संस्थान के अन्तर्गत अनेक गतिविधियाँ हस्तिनापुर में तथा अन्यत्र चल रही हैं-

1. सन् 1972 से वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला के अन्तर्गत प्रतिवर्ष लाखों ग्रंथ प्रकाशित हो रहे हैं।

2. सन् 1974 से इस संस्थान के मुखपत्र के रूप में 'सम्यग्ज्ञान' हिन्दी मासिक पत्रिका का निरंतर प्रकाशन हो रहा है।

3. सन् 1974 से 1985 तक हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप रचना का निर्माण कार्य हुआ।

4. सन् 1974 से अब तक जम्बूद्वीप रचना के अतिरिक्त अनेक जिनमंदिरों का निर्माण हुआ है- कमल मंदिर, तीन मूर्ति मंदिर, ध्यान मंदिर, शांतिनाथ मंदिर, वासुपूज्य मंदिर, ॐ मंदिर, सहस्रकूट मंदिर, विद्यमान बीस तीर्थंकर मंदिर, आदिनाथ मंदिर, अष्टापद मंदिर, ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ, स्वर्णिम तेरहद्वीप रचना, तीन लोक रचना, नवग्रहशांति जिनमंदिर, चौबीस तीर्थंकर मंदिर एवं श्री शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग प्रतिमाओं की स्थापना ।

5. जम्बूद्वीप पुस्तकालय जिसमें लगभग 15000 ग्रंथ संग्रहीत हैं।

6. णमोकार महामंत्र बैंक जिसमें भक्तों द्वारा लिखकर भेजे गये करोड़ों णमोकार मंत्र जमा किये जाते हैं।

7. समय-समय पर शिक्षण-प्रशिक्षण शिविरों तथा संगोष्ठियों के आयोजन किये जाते हैं।

8. यात्रियों के शुद्ध भोजन के लिए राजा श्रेयांस भोजनालय का संचालन।

9. यात्रियों के ठहरने के लिए आधुनिक सुविधायुक्त डीलक्स फ्लैट्स वाली कई धर्मशालाओं तथा कोठियों एवं बंगलों का निर्माण किया गया है।

10. जम्बूद्वीप परिक्रमा के लिए नौका विहार, ऐरावत हाथी तथा मनोरंजन हेतु मिनी ट्रेन, झूले आदि हैं।

11. तीर्थंकर जन्मभूमियों की वंदना एवं धार्मिक फिल्मों का प्रदर्शन करने वाले थियेटर से समन्वित गणिनी ज्ञानमती हीरक जयंती एक्सप्रेस।

12. गणिनी ज्ञानमती दिगम्बर जैन पत्राचार परीक्षा केन्द्र का संचालन।

13. इंटरनेट पर जैनधर्म के इन्साइक्लोपीडिया (www.encyclopediaofjainism. com) का निर्माण।

दिल्ली, मेरठ, मुजफ्फरनगर, हरिद्वार, झाँसी, तिजारा आदि से जम्बूद्वीप स्थल तक आने के लिए दिन भर बसें मिलती रहती हैं।

दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अन्तर्गत भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार में भव्य नंद्यावर्त महल तीर्थ, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में निर्मित तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ तथा महावीर जी अतिशय क्षेत्र के महावीर धाम परिसर में निर्मित पंचबालयति दिगम्बर जैन मंदिर का संचालन होता है। वर्तमान में इस संस्थान के अन्तर्गत सम्मेदशिखर जी तीर्थ पर "आचार्य श्री शांतिसागर धाम" का निर्माण प्रारंभ किया जा रहा है।

जम्बूद्वीप एवं अन्य रचनाओं के दर्शन हेतु हस्तिनापुर पधारकर आध्यात्मिक एवं भौतिक सुख की प्राप्ति करें।

विषयानुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ संख्या
1. मंगलाचरण	1
2. श्री शांतिनाथ जिनस्तुति	1
3. अर्हंत पूजा	3
4. श्री शांतिनाथ पूजा	8
5. अथ 108 अर्घ्य	11
6. जयमाला	25
7. प्रशस्ति	28
8. हस्तिनापुर तीर्थ पूजा	29
9. श्री शांतिनाथ भगवान की आरती	33
10. हस्तिनापुर तीर्थ की आरती	34
11. शांतिभक्ति	35
12. भजन	38
13. भजन	39
14. भजन	40

मण्डल का नक्शा

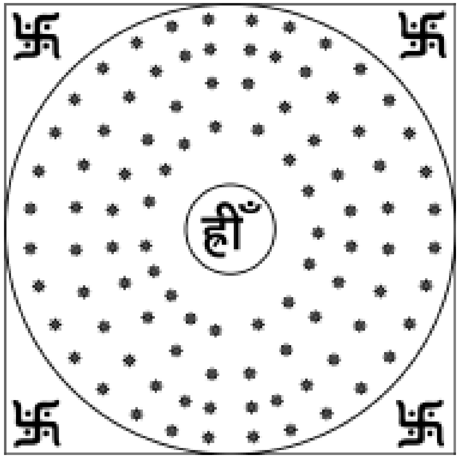

पूजा-3, कुल अर्घ्य-108, पूर्णार्घ्य-1, जयमाला-3

सर्वविघ्नहर श्री शान्तिनाथ विधान

मंगलाचरण

–उपेंद्रवज्रा छंद–

शांतिं भवेत्सर्वजगज्जनानां, शांतिं भवेत्सर्वगणाय नित्यं।
शांतं मनो मे भवसर्वतापात्, श्रीशांतिनाथं प्रणमामि नित्यं।।1।।

श्री शांतिजिन स्तुति

–शंभु छंद–

श्री शांति प्रभो ! शरणागत जन, शान्ती के दाता कहें तुम्हें।
यह धन्य हुई हस्तिनापुरी, जहाँ राज्य किया शांतीश्वर ने।।
विश्वसेन पिता ऐरादेवी, माता का अतिशय पुण्य खिला।
भादो वदि सप्तमि को प्रभु के, गर्भागम का सौभाग्य मिला।।1।।

शुभ ज्येष्ठ वदी चौदस आई, शांतीश्वर ने जब जन्म लिया।
सुरगृह में बाजे बाज उठे, इन्द्रों ने मस्तक नमित किया।।
त्रिभुवन में शांति लहर दौड़ी, नरकों में कुछ क्षण शांति हुई।
गिरि मंदर पर अभिषेक हुआ, उत्सव में भू नभ एक हुई।।2।।

शांतीश प्रभू चक्रीश बने, षट्खंड मही का भोग किया।
शुभ ज्येष्ठ वदी चौदस के दिन, बस चक्ररत्न को त्याग दिया।।
इक शतक साठ कर तनु सुन्दर, आयू इक लाख वर्ष प्रभु की।
तपनीय कनक सम कांति विभो! मृग लांछन से जाने सब ही।।3।।

प्रभु ध्यान चक्र को ले करके, मोहारि नृपति को मारा था।
वर पौष सुदी दशमी के दिन, भव्यों को मिला सहारा था।।
षोडश तीर्थंकर कामदेव, द्वादश पंचम चक्री स्वामी।
वर ज्येष्ठ वदी चौदस के दिन, त्रिभुवन साम्राज्य मिला नामी।।4।।

प्रभु नर्क–निगोद अरु विकलत्रय, दुःखों को सहता आया हूँ।
तिर्यंच–मनुज–सुर गतियों के, दुःखों से खूब सताया हूँ।।
अब इष्टवियोग–अनिष्टयोग के, दुःख से भी घबराया हूँ।
तुम शांती के दाता भगवन्, अतएव शरण में आया हूँ।।5।।

सम्यग्दर्शन औ ज्ञान चरण, ये रत्नत्रय निधि मुझे मिली।
तनु से ममता भव बीज अहा, सम्यग्दृक् कलिका आज खिली।।
हे शांतिनाथ! मैं नमूं सदा, बस भक्ति का फल एक मिले।
कैवल्य ''ज्ञानमति'' प्राप्त करूँ, मुझको सिद्धी पद शीघ्र मिले।।6।।

।।अथ जिनयज्ञप्रतिज्ञापनाय मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

पूजा नं. 1

अर्हंत पूजा

स्थापना–गीता छंद

अरिहंत प्रभु ने घातिया को घात निज सुख पा लिया।
छ्यालीस गुण के नाथ अठरह दोष का सब क्षय किया।।
शत इंद्र नित पूजें उन्हें गणधर मुनी वंदन करें।
हम भी प्रभो! तुम अर्चना के हेतु अभिनन्दन करें।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः हे अर्हत्परमेष्ठिन्! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः हे अर्हत्परमेष्ठिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः हे अर्हत्परमेष्ठिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–बसन्ततिलका छंद–

श्रीमज्जिनेंद्र पद में जलधार देऊं।
आतंक पंक जग का सब दूर होवे।।
इच्छानुसार फलदायक कल्पतरू ये।
पूजा जिनेन्द्रप्रभु की त्रय ताप नाशे।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः परमेष्ठिभ्यः स्वाहा। (जलं निर्वपामीति स्वाहा।)

काश्मीरि केशर सुचंदन को घिसाऊँ।
चर्चूं जिनेन्द्र पदपंकज में रुचि से।।
संसार के सकल ताप विनाश करती।
पूजा जिनेन्द्र प्रभु की सब सौख्य देती।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः परमात्मकेभ्यः चंदनं ... ।

जो कुंदपुष्प कलियों सम दीखते हैं।
धोये सु तंदुल लिये भर थाल में हैं।।
अर्हंत सन्मुख रखूँ बहु पुंज नीके।
पाथेय मोक्षपथ में जन के लिये हो।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः अनादिनिधनेभ्यः अक्षतं ... ।

मल्ली गुलाब वर पुष्प सुगंधि करते।
अर्हंत के चरण में रुचि से चढ़ाऊँ।।
पापान्धकूप मधि डूब रहे जनों को।
उद्धार हेतु जिनपूजन ही जगत् में।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः सर्वनृसुरासुरपूजितेभ्यः पुष्पं ... ।

शालीय ओदन सुगंधित भोज्यवस्तू।
पीयूष तुल्य चरु लेकर थाल भरके।।
अर्हंत सन्मुख चढ़ा क्षुध व्याधि नाशूँ।
तृप्ती अनंत जिनपूजन से मिलेगी।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः अनंतज्ञानेभ्यः नैवेद्यं ... ।

जो चित्त का तमसमूह विनाश करके।
त्रैलोक्यगेह वर दीपक दीप ज्योति।।
ले दीप आरति करूँ वरज्ञानज्योति।
पाऊँ अनंत निजज्ञान विकास करके।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः अनंतदर्शनेभ्यः दीपं ... ।

जो धूप सुन्दर सुगंध बिखेरती है।
अग्नी विषे जलत धूम्र उड़ावती है।।
खेऊँ दशांगवर धूप जिनेन्द्र आगे।
संपूर्ण पाप जलते वर सौख्य होगा।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः अनंतवीर्येभ्यः धूपं ... ।

ये कल्पवृक्ष फल सम अति मिष्ट ताजे।
अमृत समान रस से परिपूर्ण दीखें।।
पूजा करूँ फल चढ़ाकर आपकी मैं।
स्वात्मैक सिद्धि फल प्राप्त करूँ इसी से।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः अनंतसौख्येभ्यः फलं ... ।

नीरादि आठ वर द्रव्य संजोय करके।
घंटा ध्वजा चंवर छत्र सुदर्पणादी।।

मांगल्य द्रव्य शुभ लेकर पूजते ही।
संपूर्ण मंगल मिले निज सौख्य पाऊँ।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः परममंगलेभ्यः अर्घ्यं ... ।

श्रीपूज्यपाद जिन के चरणाब्ज नमते।
संपूर्ण इंद्र शिर से अतिभक्ति भावे।।
श्री पूज्य के पदनिकट जलधार देते।
हो शांति लोक त्रय में मुझ भक्त को भी।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः स्वस्ति भद्रं भवतु जगतां शांतये शांतिधारां निष्पादयामि शांतिकृद्भ्यः स्वाहा।

(शांतिधारा करें)

जो इन्द्र भक्ति वश नेत्र हजार करके।
बाहू हजार कर तांडव नृत्य करता।।
ऐसे जिनेन्द्रपद पुष्प चढ़ाय करके।
पूजा त्रिकाल कर अनुपम सौख्य पाऊँ।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः ध्यातृभिः अभीप्सितफलेभ्यः स्वाहा।

(पुष्पांजलि चढ़ावें)

जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्परमेष्ठिभ्यो नमः।

जयमाला

–दोहा–

श्री अरिहंत जिनेन्द्र का, धरूँ हृदय में ध्यान।
गाऊँ गुणमणिमालिका, हरूँ सकल अपध्यान।।1।।

–शम्भु छंद–

जय जय प्रभु तीर्थंकर जिनवर, तुम समवसरण में राज रहे।
जय जय अर्हंत् लक्ष्मी पाकर, निज आत्मा में ही आप रहे।।
जन्मत ही दश अतिशय होते, तन में न पसेव न मल आदी।
पयसम सित रुधिर सु समचतुष्क, संस्थान संहनन है आदी।।1।।

अतिशय सुरूप, सुरभित तनु हैं, शुभ लक्षण सहस आठ सौ हैं।
अतुलित बल प्रियहित वचन प्रभो, ये दश अतिशय जन मन मोहें।।
केवल रवि प्रगटित होते ही, दश अतिशय अद्भुत ही मानों।
चारों दिश इक-इक योजन तक, सुभिक्ष रहे यह सरधानो।।2।।

हो गगन गमन नहिं प्राणीवध, नहिं भोजन नहिं उपसर्ग तुम्हें।
चउमुख दीखें सब विद्यापति, नहिं छाया नहिं टिमकार तुम्हें।।
नहिं नख औ केश बढ़े प्रभु के, ये दश अतिशय सुखकारी हैं।
सुरकृत चौदह अतिशय मनहर, जो भव्यों को हितकारी हैं।।3।।

सर्वार्ध मागधीया भाषा, सब प्राणी मैत्री भाव धरें।
सब ऋतु के फल औ फूल खिलें, दर्पणवत् भूरत्नाभ धरें।।
अनुकूल सुगंधित पवन चले, सब जन मन परमानंद भरें।
रजकंटक विरहित भूमि स्वच्छ, गंधोदक वृष्टी देव करें।।4।।

प्रभु पद तल कमल खिलें सुन्दर, शाली आदिक बहु धान्य फलें।
निर्मल आकाश दिशा निर्मल, सुरगण मिल जय जयकार करें।।
अरिहंत देव का श्रीविहार, वर धर्मचक्र चलता आगे।
वसु मंगल द्रव्य रहें आगे, यह विभव मिला जग के त्यागे।।5।।

तरुवर अशोक सुरपुष्प वृष्टि, दिव्यध्वनि चौंसठ चमर कहें।
सिंहासन भामंडल सुरकृत, दुंदुभि छत्रत्रय शोभ रहें।।
ये प्रातिहार्य हैं आठ कहे, औ दर्शन ज्ञान सौख्य वीरज।
ये चार अनंत चतुष्टय हैं, सब मिलकर छ्यालिस गुण कीरत।।6।।

क्षुध तृषा जन्म मरणादि दोष, अठदश विरहित निर्दोष हुए।
चउ घाति घात नवलब्धि पाय, सर्वज्ञ प्रभू सुखपोष हुए।।
द्वादशगण के भवि असंख्यात, तुम धुनि सुन हर्षित होते हैं।
सम्यक्त्व सलिल को पाकर के, भव भव के कलिमल धोते हैं।।7।।

मैं भी भवदुःख से घबड़ा कर, अब आप शरण में आया हूँ।
सम्यक्त्व रतन नहिं लुट जावे, बस यही प्रार्थना लाया हूँ।।

संयम की हो पूर्ती भगवन्! औ मरण समाधी पूर्वक हो।
हो केवल 'ज्ञानमती' सिद्धी, जो सर्व गुणों की पूरक हो।।8।।

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं अर्हत्परमेष्ठिभ्यः जयमाला महार्घ्यं....।

शांतये शांतिधारा, पुष्पांजलिः।

–दोहा–

मोह अरी को हन हुए, त्रिभुवन पूजा योग्य।
नमो नमो अरिहंत को, पाऊँ सौख्य मनोज्ञ।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

पूजा नं. २

श्री शांतिनाथ पूजा

स्थापना –गीता छंद

जो गणधरों से वंद्य हैं, बारह सभा के नाथ हैं।
निज भक्त को संसार में, करते सदैव सनाथ हैं।।
उन शांतिनाथ जिनेंद्र को, मैं आज पूजूँ भाव से।
निज आत्म निधि की प्राप्ति हो, अतएव थापूँ चाव से।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीशांतिनाथतीर्थंकर! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीशांतिनाथतीर्थंकर! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीशांतिनाथतीर्थंकर! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अष्टकं –चाल –नंदीश्वर पूजा

यमुना नदि का शुचिनीर, झारी पूर्ण भरूँ।
मैं पाऊँ भवदधि तीर, तुम पद धार करूँ।।
श्री शान्तिनाथ भगवान, बारह गण वंदित।
हो स्वपर भेदविज्ञान, पूजूँ मैं संप्रति।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरि चंदन सार, गंध सुगंध करे।
चर्चूं जिनपद सुखकार, मन की तपन हरे।।श्री शान्तिनाथ.।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोतीसम अक्षत लाय, पुंज चढ़ाऊँ मैं।
निज अक्षयपद को पाय, यहाँ न आऊँ मैं।।श्री शान्तिनाथ.।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

बेला मचकुंद गुलाब, चुन चुन के लाऊँ।
अर्पूं जिनवर चरणाब्ज, निजसुखयश पाऊँ।।श्री शान्तिनाथ.।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं लड्डू मोतीचूर, थाली भर लाऊँ।
हो क्षुधा वेदना दूर, अर्पत सुख पाऊँ।।श्री शान्तिनाथ.।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृतमय दीपक की ज्योति, जग अंधेर हरे।
मुझ मोहतिमिर हर ज्योति, ज्ञानउद्योत करे।।श्री शान्तिनाथ.।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंध सुगंधित धूप, खेऊँ अगनी में।
उड़ती दशदिश में धूम्र, फैले यश जग में।।श्री शान्तिनाथ.।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

केला अंगूर अनार, श्रीफल भर थाली।
अर्पूं जिन आगे सार, मनरथ नहिं खाली।।श्री शान्तिनाथ.।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल आदिक अर्घ्य बनाय उसमें रत्न मिला।
जिन आगे नित्य चढ़ाय, पाऊँ सिद्ध शिला।।श्री शान्तिनाथ.।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा –

सुवरण झारी में भरूँ, गंगा नदि को नीर।
शांतीधारा मैं करूँ, मिले भवोदधि तीर।।10।।

शांतये शांतिधारा।

चंप चमेली केवड़ा, बेला बकुल गुलाब।
पुष्पांजलि अर्पण करत, शीघ्र स्वात्म सुख लाभ।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

पंचकल्याणक अर्घ्य

–रोला छंद –

भादों कृष्णा पाख, सप्तमि तिथि शुभ आई।
गर्भ बसे प्रभु आप, सब जन मन हरषाई।।
इन्द्र सुरासुर संघ, उत्सव करते भारी।
हम पूजें धर प्रीति, जिनवर पद सुखकारी।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं भाद्रपदकृष्णासप्तम्यां श्रीशांतिनाथतीर्थंकरगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

जन्म लिया प्रभु आप, ज्येष्ठवदी चौदस में।
सुरगिरि पर अभिषेक, किया सभी सुरपति ने।।
शांतिनाथ यह नाम, रखा शांतिकर जग में।
हम नावें निज माथ, जिनवर चरणकमल में।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां श्रीशांतिनाथतीर्थंकरजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीक्षा ली प्रभु आप, ज्येष्ठ वदी चौदस के।
लौकांतिक सुर आय, बहु स्तवन उचरते।।
इंद्र सपरिकर आय, तप कल्याणक करते।
हम पूजें नत माथ, सब दुख संकट हरते।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां श्रीशांतिनाथतीर्थंकरदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञान विकास, पौष सुदी दशमी के।
समवसरण में नाथ, राजें अधर कमल पे।।
इंद्र करें बहु भक्ति, बारह सभा बनी हैं।
सभी भव्य जन आय, सुनते दिव्य धुनी हैं।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं पौषशुक्लादशम्यां श्रीशांतिनाथतीर्थंकरकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राप्त किया निर्वाण, ज्येष्ठ वदी चौदश में।
आत्यंतिक सुखशांति, प्राप्त किया उस क्षण में।।
महामहोत्सव इंद्र, करते बहुवैभव से।
हम पूजें तुम पाद, छुटें सभी भवदुःख से।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां श्रीशांतिनाथतीर्थंकरमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य (दोहा)–

विश्वशांतिकर्ता प्रभो! शांतिनाथ भगवान।
पूर्ण अर्घ्य अर्पण करत, पाऊँ सौख्य निधान।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीशांतिनाथतीर्थंकरपंचकल्याणकाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ 108 अर्घ्य

गुणी जनों में गुण रहे, बिन आश्रय न बसंत।
गुणयुत नामों को यजत, गुणी स्वयं पूजंत।।1।।

।।अथ मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

चाल - हे दीनबंधु..........

हे नाथ 'दिव्यभाषापति' आप कहाये।
अठरा महाभाषा व लघू सात सौ गाये।।
श्री शांतिनाथ पूजा भव व्याधि हरेगी।
ये ज्ञानज्योति देके अज्ञान हरेगी।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं दिव्यभाषापतिनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

हे नाथ 'दिव्य' तुम हो, अतिशय सुरूप से।
नर सुर से अधिक सुंदर तन आपका दिपे।।श्री.।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं दिव्यनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

हे 'पूतवाक्' आपकी वाणी पवित्र है।
सब दोष से विवर्जित अतिशय विशुद्ध है।।श्री.।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं पूतवाक्नामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

हे नाथ 'पूतशासन' तुम मत पवित्र है।
वह पूर्व अपर के विरोध दोष रहित है।।श्री.।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं पूतशासननामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

'पूतात्मा' प्रभु आपकी आत्मा पवित्र है।
अरु आप भव्यजीव को करते पवित्र हैं।।श्री.।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं पूतात्मानामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

हे नाथ 'परमज्योति' आप ज्योतिपुंज हैं।
उत्कृष्ट ज्ञानज्योति रूप तेजपुंज हैं।।श्री.।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं परमज्योतिनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

हे नाथ 'धर्माध्यक्ष' चारित के अधीश हो।
दशधर्म के अध्यक्ष ज्ञान के अधीश हो।।श्री.।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्माध्यक्षनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

इंन्द्रियजयी दमी मुनि के ईश आप हैं।
हे नाथ 'दमीश्वर' प्रसिद्ध मुक्तिनाथ हैं।।श्री.।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं दमीश्वरनाथसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

संसार मोह संपदा लक्ष्मी के पती हो।
हे नाथ आप 'श्रीपति' मुक्ती के पती हो।।श्री.।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीपतिनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

'भगवान्' आप ज्ञान व ऐश्वर्य पूर्ण हो।
सुरपूज्य आठ प्रातिहार्य विभव पूर्ण हो।।श्री.।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं भगवान्नामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

'अर्हंत' इन्द्र आदि से पूजा को प्राप्त हो।
अरि रज[1] रहस्य चार कर्म रहित आप हो।।श्री.।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं अर्हंतनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

---

१. अन्तराय कर्म।

हे नाथ 'अरज' आप कर्मधूलि हीन हो।
ज्ञानावरण व दर्शनावरण विहीन हो।।श्री.।।12।।
ॐ ह्रीं अर्हं अरजस्नामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

हे नाथ 'विरज' आप कर्मरज विहीन हो।
भव्यों की कर्मधूलि नाश में प्रवीण हो।।श्री.।।13।।
ॐ ह्रीं अर्हं विरजस्नामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

हे नाथ 'शुचि' ब्रह्मचर्य से पवित्र हो।
निज शुद्ध आत्म तीर्थ स्नान से पवित्र हो।।श्री.।।14।।
ॐ ह्रीं अर्हं शुचिनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

हे 'तीर्थकृत्' भवोदधि से भव्य तारते।
श्रुत द्वादशांग तीर्थ के कर्ता बखानते।।श्री.।।15।।
ॐ ह्रीं अर्हं तीर्थकृत्नामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

संपूर्ण मोह आवरण व विघ्न नाशिया।
कैवल्य पाय 'केवली' हो मुनि भाषिया।।श्री.।।16।।
ॐ ह्रीं अर्हं केवलिनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

'ईशान' आप अनंत शक्ति से समर्थ हो।
अहमिंद्र आदि के भि ईश जग प्रसिद्ध हो।।श्री.।।17।।
ॐ ह्रीं अर्हं ईशाननामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

'पूजार्ह' पाँच विद्या अर्चना के योग्य हो।
मह कल्पतरु ऐन्द्रध्वज आदि पूज्य हो।।श्री.।।18।।
ॐ ह्रीं अर्हं पूजार्हनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

सब कर्ममल कलंक धोय शुद्ध आत्मा।
हे नाथ 'स्नातक' सुज्ञान चंद्रपूर्णिमा[1]।।श्री.।।19।।
ॐ ह्रीं अर्हं स्नातकनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।।

हे नाथ 'अमल' देह मलादि विहीन हो।
नैर्मल्य आप राग आदि दोष क्षीण हो।।श्री.।।20।।
ॐ ह्रीं अर्हं अमलनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

---
१. पूर्णज्ञान सहित हैं।

'अनंतदीप्ति' नाथ ज्ञानदीप्ति धारते।
निजदेह दीप्ति से समस्त ध्वांत वारते।।
श्री शांतिनाथ पूजा भव व्याधि हरेगी।
ये ज्ञानज्योति देके अज्ञान हरेगी।।21।।
ॐ ह्रीं अर्हं अनंतदीप्तिनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

प्रभु पाँच विधे ज्ञान से 'ज्ञानात्मा' कहे।
कैवल्यज्ञानदेहमयी आत्मा कहे।।श्री.।।22।।
ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानात्मानामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

हे नाथ! 'स्वयंबुद्ध' स्वयं ही प्रबुद्ध हो।
गुरु की सहाय बिन समस्त ज्ञान युक्त हो।।श्री.।।23।।
ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंबुद्धनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

'प्रजापति' त्रिलोक जीव रक्षते पती।
संपूर्ण प्रजा को सदा पालें प्रजापती।।श्री.।।24।।
ॐ ह्रीं अर्हं प्रजापतिनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

हे नाथ 'मुक्त' कर्म बंधनादि मुक्त हो।
संपूर्ण दोष से विमुक्त भ्रमण मुक्त हो।।श्री.।।25।।
ॐ ह्रीं अर्हं मुक्तनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

चाल-नंदीश्वर पूजा

प्रभु 'शक्त' नाम है आप, परिषह सहन किया।
तुम भक्ति करे निष्पाप, इससे शरण लिया।।
श्री शांतिनाथ की भक्ति, भवभव ताप हरे।
प्रगटावे आतम शक्ति, सौख्य अबाध करे।।26।।
ॐ ह्रीं अर्हं शक्तनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

प्रभु 'निराबाध' उपसर्ग, बाधा विरहित हो।
निज भक्तों को सुख स्वर्ग, देते शिवप्रद हो।।श्री.।।27।।
ॐ ह्रीं अर्हं निराबाधनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

प्रभु 'निष्कल' देह विमुक्त, काल कला हीना।
विज्ञान कलागुण युक्त, कवलाहार बिना।।श्री.।।28।।
ॐ ह्रीं अर्हं निष्कलनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

'भुवनेश्वर' त्रिभुवन ईश, भविजन के त्राता।
मैं जजूँ नमाकर शीश, पाऊँ सुख साता।।श्री.।।29।।
ॐ ह्रीं अर्हं भुवनेश्वरनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

हे नाथ 'निरंजन' आप, कर्मांजन शून्या।
सब द्रव्यभाव नोकर्म, विरहित सुख पूर्णा।।श्री.।।30।।
ॐ ह्रीं अर्हं निरंजननामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

हे 'जगज्ज्योति' जिनराज, केवलज्ञान लहा।
सब लोक अलोक प्रकाश, अनुपम ज्योतिमहा।।श्री.।।31।।
ॐ ह्रीं अर्हं जगज्ज्योतिर्नामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

हे नाथ 'निरुक्तोक्ती' य, सार्थक वचन धरो।
सब पूर्वापर अविरोधि, हित उपदेश करो।।श्री.।।32।।
ॐ ह्रीं अर्हं निरुक्तोक्तिनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

हे नाथ 'निरामय' आप, व्याधि विवर्जित हो।
पूजत ही स्वास्थ्य सुलाभ, भविजन हर्षित हो।।श्री.।।33।।
ॐ ह्रीं अर्हं निरामयनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

'अचलस्थिति' हे जिननाथ, तुम थल अचल कहा।
हो अचल आत्म थल वास, पूजूँ हरस महा।।श्री.।।34।।
ॐ ह्रीं अर्हं अचलस्थितिनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

'अक्षोभ्य' नाथ नहिं क्षोभ, तुममें कभी हुआ।
सब मिटे चित्त का क्षोभ, ये ही विनय किया।।श्री.।।35।।
ॐ ह्रीं अर्हं अक्षोभ्यनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

'कूटस्थ' कूट-लोकाग्र, ऊपर तिष्ठे हो।
करिये मुझ मन एकाग्र, ईप्सित देते हो।।।।श्री.।।36।।
ॐ ह्रीं अर्हं कूटस्थनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

हे नाथ आप 'स्थाणु', गमनागमन नहीं।
हे लोकशिखर विश्राम, काल अनंत सही।।
श्री शांतिनाथ की भक्ति, भवभव ताप हरे।
प्रगटावे आतम शक्ति, सौख्य अबाध करे।।37।।
ॐ ह्रीं अर्हं स्थाणुनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

प्रभु 'अक्षय' क्षय नहिं होय, काल अनंते भी।
प्रभु इंद्रिय सुख नहिं कोय, आप अतीन्द्रिय भी।।श्री.।।38।।
ॐ ह्रीं अर्हं अक्षयनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

हे नाथ! 'अग्रणी' आप, जग में मुख्य सही।
ले जाते तुम लोकाग्र, भवि को सौख्य मही।।श्री.।।39।।
ॐ ह्रीं अर्हं अग्रणीनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

हे नाथ 'ग्रामणी' आप, जग में भव्यों को।
करवाते मुक्ती प्राप्त, निज सुख दो मुझको।।श्री.।।40।।
ॐ ह्रीं अर्हं ग्रामणीनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

भविजन को हितपथ माहिं, ले जाते 'नेता'।
मैं पूजूँ भक्ति बढ़ाय, शिवपथ के नेता।।श्री.।।41।।
ॐ ह्रीं अर्हं नेतृनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

प्रभु द्वादशांगमय शास्त्र रचना करते हो।
इसलिये 'प्रणेता' आप, हित उपदिशते हो।।श्री.।।42।।
ॐ ह्रीं अर्हं प्रणेतृनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

प्रभु न्यायशास्त्र उपदेश, करते आप सदा।
तुम 'न्यायशास्त्रवित्' नाम, कहते इंद्र मुदा।।श्री.।।43।।
ॐ ह्रीं अर्हं न्यायशास्त्रवित्नामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

नित धर्मामृत उपदेश, देते गुरु 'शास्ता'।
हित अनुशास्ता परमेश, देवो मुझ साता।।श्री.।।44।।
ॐ ह्रीं अर्हं शास्तृनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

प्रभु 'धर्मपती' तुम नाम, धर्माधीश्वर हो।
दश धर्मों के तुम धाम, शिवप्रद ईश्वर हो।।श्री.।।45।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मपतिनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

प्रभु चउविध[1] धर्मसमेत, धर्म्य कहाते हो।
रत्नत्रय[2] जीवदयादि[3], वस्तुस्वभाव[4] कहो।।श्री.।।46।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्म्यनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

तुम आत्मा धर्मस्वरूप, शिवफल प्राप्त किया।
'धर्मात्मा' नाम अनूप, सुरपति आन दिया।।श्री.।।47।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मात्मन्नामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

प्रभु 'धर्मतीर्थकृत' आप, धर्म सुतीर्थ किया।
सम्यक् चारितमय तीर्थ, का उपदेश दिया।।श्री.।।48।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मतीर्थकृत्नामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

प्रभु 'वृषध्वज' आप प्रसिद्ध, धर्मध्वजा धारो।
तुम हरिण चिन्ह से सिद्ध, पाप सु परिहारो।।श्री.।।49।।

ॐ ह्रीं अर्हं वृषध्वजनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

वृष-धर्म अहिंसारूप, उसके स्वामी हो।
हो 'वृषाधीश' निजरूप, अंतर्यामी हो।।श्री.।।50।।

ॐ ह्रीं अर्हं वृषाधीशनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

-चामर छंद-

नाथ 'वृषकेतु' आप धर्म की ध्वजा करो।
जैन धर्म की ध्वजा त्रिलोक में भि फरहरो।।
शांतिनाथ की सदा मैं करूँ उपासना।
आत्म सौख्य प्राप्त हो जहाँ पे दुःख रंच ना।।51।।

ॐ ह्रीं अर्हं वृषकेतुनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

कर्म शत्रु नाश हेतु धर्मशास्त्र धारते।
नाथ! 'वृषायुध' अनंत जन्म को निवारते।।शांति.।।52।

ॐ ह्रीं अर्हं वृषायुधनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

---

१. क्षमादि धर्म। २. रत्नत्रय धर्म। ३. जीवदया धर्म। ४. वस्तुस्वभाव धर्म।

आप 'वृष' नामधारि धर्मरूप विश्व में।
धर्ममय पियूष वृष्टि कारि मेघ भव्य में।।
शांतिनाथ की सदा मैं करूँ उपासना।
आत्म सौख्य प्राप्त हो जहाँ पे दुःख रंच ना।।53।।

ॐ ह्रीं अर्हं वृषनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

नाथ 'वृषपती' दयामयी सुधर्म के पती।
आप शर्ण पाय भव्य लेय पंचमी गती।।शांति.।।54।।

ॐ ह्रीं अर्हं वृषपतिनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

नाथ 'भर्तृ' आप भव्य जीव पोषते सदा।
दुःख से निकाल श्रेष्ठ सौख्य में धरें सदा।।शांति.।।55।।

ॐ ह्रीं अर्हं भर्तृनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

नाथ 'वृषभांक' बैल चिन्ह आपका कहा।
श्रेष्ठ धर्म चिन्ह से समस्त को सुखी किया।।शांति.।।56।।

ॐ ह्रीं अर्हं वृषभांकनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

नाथ 'वृषोद्भव' सुआप धर्म को जनम दिया।
धर्म से हि तीर्थनाथ होय जन्म धारिया।।शांति.।।57।।

ॐ ह्रीं अर्हं वृषोद्भवनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

भो 'हिरण्यनाभि' स्वर्ण-रूप नाभि धारते।
आप गर्भ पूर्व इन्द्र स्वर्णवृष्टि कारते।।शांति.।।58।।

ॐ ह्रीं अर्हं हिरण्यनाभिनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

'भूत आतमा' जिनेश! सत्यरूप आतमा।
आप पाद शीश नाय होऊँ अंतरातमा।।शांति.।।59।।

ॐ ह्रीं अर्हं भूतात्मन्नामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

'भूभृत्' प्रभो! समस्त भव्यजीव पोषते।
आप शर्ण आय साधु सर्व कर्म धोवते।।शांति.।।60।।

ॐ ह्रीं अर्हं भूभृत्नामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

'भूत भावनो' सुआप भावना सुउत्तमा।
हाथ जोड़ शीश नाय भव्य जांय मुक्ति मा।।शांति.।।61।।

ॐ ह्रीं अर्हं भूतभावननामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

नाथ 'प्रभव' आप मुक्ति प्राप्ति हेतु भव्य को।
आप जन्म है प्रशंस सौख्य हेतु विश्व को।।शांति.।।62।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रभवनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

नाथ! 'विभव' भव विमुक्त भव्य भव विनाशते।
भव विशिष्ट पाय धर्मचक्र को चलावते।।शांति.।।63।।

ॐ ह्रीं अर्हं विभवनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

नाथ! 'भास्वान्' आप ज्ञान दीप्तिरूप हो।
आत्म को प्रकाश्य भव्य को प्रकाश हेतु हो।।शांति.।।64।।

ॐ ह्रीं अर्हं भास्वान्नामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

नाथ! 'भव' उत्पत्ति व्यय व ध्रौव्य सत्‌रूप हो।
भव्य चित्त मांहि होय पापपंक धोत हो।।शांति.।।65।।

ॐ ह्रीं अर्हं भवनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

'भाव' आप चित्स्वरूप स्वात्म में हि लीन हो।
साधुवृन्द के हृदय निलीन दुःख हीन हो।।शांति.।।66।।

ॐ ह्रीं अर्हं भावनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

प्रभो! 'भवांतको' चतुर्गती भवो कुनाशिया।
भव्य के अनंतभव क्षणेक में विनाशिया।।शांति.।।67।।

ॐ ह्रीं अर्हं भवांतकनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

भो! 'हिरण्यगर्भ' गर्भ पूर्व स्वर्ण वर्षते।
आपके पिता कि जीत ना किसी से हो सके।।शांति.।।68।।

ॐ ह्रीं अर्हं हिरण्यगर्भनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

'श्रीगरभ' सुआप अन्तरंग नंतसंपदा।
श्री सु आदि देवियों ने मात सेव की मुदा।।शांति.।।69।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीगर्भनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

भो! 'प्रभूतविभव' आपका विभव महान है।
तीन लोक साम्राज्य पाय सुख निधान हैं।।
शांतिनाथ की सदा मैं करूँ उपासना।
आत्म सौख्य प्राप्त हो जहाँ पे दुःख रंच ना।।70।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रभूतविभवनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

नाथ! 'अभव' आप जन्म ना धरें कभी यहाँ।
आप पाद सेय भव्य जनम नाशते यहाँ।।शांति.।।71।।

ॐ ह्रीं अर्हं अभवनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

नाथ! 'स्वयंप्रभु' आप ही स्वयं समर्थ हैं।
सर्व कर्म नाश हेतु आप पूर्ण दक्ष हैं।।शांति.।।72।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंप्रभुनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

प्रभो! 'प्रभूतातमा' सुआप आतमा यहाँ।
ज्ञान से समस्त लोक व्यापता सुखावहा[1]।।शांति.।।73।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रभूतात्मन्नामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

'भूतनाथ' सर्वजीव के हि आप नाथ हो।
आप भक्ति से मुनीशवृंद भी सनाथ हों।।शांति.।।74।।

ॐ ह्रीं अर्हं भूतनाथनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

हो 'जगतत्प्रभु' त्रिलोक स्वामि समर्थ हो।
सर्व सौख्यदान हेतु आप पूर्ण दक्ष हो।।शांति.।।75।।

ॐ ह्रीं अर्हं जगतत्प्रभुनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

-सखी छंद-

'सर्वादि' सर्व-जग आदी।
तुमसे सृष्टी उत्पादी।।
प्रभु शांतिनाथ को पूजूँ।
सब आधि-व्याधि से छूटूँ।।76।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वादिनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

---

१. सुख को देने वाला।

हे नाथ! 'सर्वदृक्' तुम हो।
सब वस्तु देखते प्रभु हो।।प्रभु.।।77।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वदृक्नामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

प्रभु 'सार्व' सभी को पालें।
सबका हित करने वाले।।प्रभु.।।78।।

ॐ ह्रीं अर्हं सार्वनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

'सर्वज्ञ' सर्व जग जानो।
त्रैलोक्य त्रिकालिक जानो।।प्रभु.।।79।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वज्ञनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

प्रभु तुम्हीं 'सर्वदर्शन' हो।
सब कुमतों के मर्दक हो।।प्रभु.।।80।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वदर्शननामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

'सर्वात्मा' तुम अंतर में।
सब वस्तु झलकती क्षण में।।प्रभु.।।81।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वात्मन्नामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

प्रभु आप 'सर्वलोकेशा'।
तिहुँलोक अलोक अधीशा।।प्रभु.।।82।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वलोकेशनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

प्रभु आप 'सर्वविद्' मानें।
इक क्षण में सबको जानें।।प्रभु.।।83।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वविद्नामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

प्रभु 'सर्वलोकजित्' तुम हो।
पणविध संसार विजित् हो।।प्रभु.।।84।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वलोकजित्नामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

प्रभु 'सुगति' मोक्षगति सुन्दर।
कैवल्यज्ञान उत्तम धर।।प्रभु.।।85।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुगतिनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

'सुश्रुत' अतिशायि प्रसिद्धा।
सब भावश्रुतों के धर्ता।।
प्रभु शांतिनाथ को पूजूँ।
सब आधि-व्याधि से छूटूँ।।86।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुश्रुतनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

'सुश्रुत्' सब अरज सुना है।
भव्यों हित मार्ग भणा है।।प्रभु.।।87।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुश्रुत्नामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

प्रभु आप वचन उत्तम हैं।
अतएव 'सुवाक्' प्रथम हैं।।प्रभु.।।88।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुवाक्नामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

प्रभु 'सूरि' सभी के गुरु हो।
सब विद्याओं के धुरि हो।।प्रभु.।।89।।

ॐ ह्रीं अर्हं सूरिनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

'बहुश्रुत' सब श्रुत के ज्ञानी।
तुमसे प्रकटी जिनवाणी।।प्रभु.।।90।।

ॐ ह्रीं अर्हं बहुश्रुतनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

'विश्रुत' त्रिभुवन विख्याता।
श्रुत बिना चराचर ज्ञाता।।प्रभु.।।91।।

ॐ ह्रीं अर्हं विश्रुतनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

'विश्वतःपाद' तम घाती।
तुम ज्ञान किरण जग व्यापी।।प्रभु.।।92।।

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वतःपादनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

प्रभु 'विश्वशीर्ष' सिरताजो।
तुम लोक शिखर पर राजो।।प्रभु.।।93।।

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वशीर्षनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

प्रभु 'शुचिश्रवा' तुम कर्णा।
भवि वचन सुनें दें शर्णा।।प्रभु.।।94।।

ॐ ह्रीं अर्हं शुचिश्रवानामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

प्रभु तुम 'सहस्रशीर्षा' हो।
आनन्त्य सुखी कीर्ता हो।।प्रभु.।।95।।

ॐ ह्रीं अर्हं सहस्रशीर्षनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

'क्षेत्रज्ञ' क्षेत्र-आत्मा को।
जाना सब कर आत्मा को।।प्रभु.।।96।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्षेत्रज्ञनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

प्रभु 'सहस्राक्ष' जग मानें।
आनन्त्य पदार्थ सुजानें।।प्रभु.।।97।।

ॐ ह्रीं अर्हं सहस्राक्षनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

प्रभु 'सहस्रपात्' जगव्यापा।
तुम बल अनंत जगख्याता।।प्रभु.।।98।।

ॐ ह्रीं अर्हं सहस्रपात्नामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

'भूत भव्यभवद्भर्ता' हो।
त्रैकालिक सुख कर्ता हो।।प्रभु.।।99।।

ॐ ह्रीं अर्हं भूतभव्यभवद्भर्तृनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

'विश्वविद्यामहेश्वर' तुम ही।
सब विद्या के ईश्वर ही।।प्रभु.।।100।।

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वविद्यामहेश्वरनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं.......।

–सोरठा–

शाश्वत धर्म निरूप्य, नाथ! 'धर्मदेशक' कहे।
नमत मिले निजरूप, जजत सर्वसुख संपदा।।101।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मदेशकनामविभूषिताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'शुभंयु' आप, त्रिभुवन में मंगल करो।
हरो मोहसंताप, जँजू नित्य गुण गायके।।102।।

ॐ ह्रीं अर्हं शुभंयुनामविभूषिताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनवधि सुख विलसंत, 'सुखसाद्भूत' प्रसिद्ध हो।
निजसुख मिले अनंत, पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय के।।103।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुखसाद्भूतनामविभूषिताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पुण्यराशि' भगवंत, श्रेष्ठ पुण्य फलरूप हो।
जजत मिले भव अंत, शिरोरोग सब दूर हों।।104।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यराशिनामविभूषिताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म जरा मृति रोग, शून्य 'अनामय' आप हो।
मिटें हृदय के रोग, पूर्ण स्वास्थ्य हो पूजते।।105।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनामयनामविभूषिताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'धर्मपाल' भगवान् धर्मतीर्थ कर्ता तुम्हीं।
जजूँ सिद्ध गुणखान, रक्तचाप व्याधी नशे।।106।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मपालनामविभूषिताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जगत्पाल' जिनदेव, त्रिभुवन गुरु जगपूज्य हो।
नमत करूँ भवछेव, शिवलक्ष्मी पाऊँ तुरत।।107।।

ॐ ह्रीं अर्हं जगत्पालनामविभूषिताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'धर्मपरमसाम्राज्य', उसके स्वामी आप ही।
मिले स्वात्म साम्राज्य, जजूँ अर्घ्य ले भक्ति से।।108।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मसाम्राज्यनायकनामविभूषिताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य - शंभुछंद –

दिवभाषापति से ले करके, श्रीधर्मसाम्राज्यनायक तक।
इक शतक आठ मंत्र जपते, शत खंड खंड हो जावें अघ।।

मैं अतिशय भक्ती श्रद्धा से, तुम नाम मंत्र को नित पूजूँ।
निज आतम अमृतरस पीकर, सब जन्म मरण दुख से छूटूँ।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं दिव्यभाषापत्यादि–अष्टोत्तरशतनाममंत्रविभूषिताय श्रीशांतिनाथ-तीर्थंकराय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

– जाप्य –

1. ॐ ह्रीं अर्हं श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय नमः।

अथवा

2. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वसिद्धिकराय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय नमः।

अथवा

3. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वशांतिकराय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय नमः।

(तीनों में से कोई भी एक मंत्र 108 बार या 27 बार सुगंधित पुष्पों से या लवंग से या पीले चावल से जपें।)

जयमाला

-दोहा-

अति अद्भुत लक्ष्मी धरें, समवसरण प्रभु आप।
तुम धुनि सुन भविवृन्द नित, हरें सकल संताप।।1।।

-शंभु छंद-

जय शान्तिनाथ प्रभु का वैभव, अभ्यंतर अनुपम गुणमय है।
जो दर्श ज्ञान सुख वीर्यरूप, आनन्त्य चतुष्टय निधिमय है।।
बाहर का वैभव समवसरण, जिसमें असंख्य रचना मानीं।
जब गणधर भी वर्णन करते, थक जाते मनपर्ययज्ञानी।।2।।

यह समवसरण की दिव्य भूमि, इक हाथ उपरि पृथ्वी तल से।
द्वादश योजन उत्कृष्ट कही, इक योजन हो घटते क्रम से।।

यह भूमि कमल आकार कही, जो इन्द्रनीलमणि निर्मित है।
है गंधकुटी इस मध्य सही, जो कमल कर्णिका सदृश है।।3।।

पंकज के दल सम बाह्य भूमि, जो अनुपम शोभा धारे है।
इस समवसरण का बाह्य भाग, जो दर्पण तल सम रुचि धारे है।।
यह बीस हजार हाथ ऊँचा, शुभ समवसरण अतिशय शोभे।
एकेक हाथ ऊँची सीढ़ी, सब बीस हजार प्रमित शोभे।।4।।

पंगू अन्धे रोगी बालक, औ वृद्ध सभी जन चढ़ जाते।
अंतर्मुहूर्त के भीतर ही, यह अतिशय जिन आगम गाते।।
इसमें शुभ चार दिशाओं में, अति विस्तृत महावीथियाँ हैं।
वीथी में मानस्तम्भ कहे, जिनकी कलधौत पीठिका हैं।।5।।

इक योजन से कुछ अधिक तुँग, बारह योजन से दिखते हैं।
इनमें हैं दो हजार पहलू, स्फटिक मणी के चमके हैं।।
उनमें चारों दिश में ऊपर, सिद्धों की प्रतिमाएँ राजें।
मानस्तम्भों की सीढ़ी पर लक्ष्मी की मूर्ति अतुल राजें।।6।।

ये अस्सी कोशों तक सचमुच, अपना प्रकाश फैलाते हैं।
जो इनका दर्शन करते हैं, वे निज अभिमान गलाते हैं।।
मानस्तम्भों के चारों दिश, जल पूरित स्वच्छ सरोवर हैं।
जिनमें अति सुन्दर कमल खिले, हंसादि रवों से मनहर हैं।।7।।

ये प्रभु का सन्निध पा करके, ही मान गलित कर पाते हैं।
अतएव सभी अतिशय भगवन्! तेरा ही गुरुजन गाते हैं।।
छत्तीस गणधर चक्रायुधादि, बासठ हजार मुनिवर ज्ञानी।
गणिनी हरिषेणी माता थीं, आर्यिकाओं में प्रधान मानी।।8।।

सब साठ हज़ार व तीन शतक, संयतिकायें गुरुगुण भक्ता।
दो लाख सुश्रावक चार लाख, श्राविकायें वहां सद्व्रतयुक्ता।।
मैं भी प्रभु तुम सन्निध पाकर, संपूर्ण कषायों को नाशूँ।
प्रभु ऐसा वह दिन कब आवे, जब निज में निज को परकाशूँ।।9।।

जिननाथ! कामना पूर्ण करो, निज चरणों में आश्रय देवो।
जब तक नहिं मुक्ति मिले तुझको, तब तक ही शरण मुझे लेवो।।
तब तक तुम चरण कमल मेरे, मन में नित स्थिर हो जावें।
जब तक नहिं केवल 'ज्ञानमती' तब तक मम मन तुम पद ध्यावें।।10।।

–दोहा –

तीर्थंकर गुणरत्न को, गिनत न पावें पार।
तीन रत्न के हेतु मैं, नमूँ अनंतों बार।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद –

श्री शांतिनाथ जिनवर विधान, जो भव्य भक्ति से करते हैं।
तीर्थंकर भक्ती का माहात्म्य, तीर्थंकर भी बन सकते हैं।।
जिन धर्मचक्र का वर्तन कर, त्रिभुवन में शांती करते हैं।
कैवल्य 'ज्ञानमति' किरणों से, निज पर आलोकित करते हैं।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

प्रशस्ति

–दोहा –

तीर्थंकर चक्री मदन, त्रयपद धारी ईश।
शांतिनाथ भगवान को, नमूँ-नमूँ नत शीश।।1।।

कुंथुनाथ-अरनाथ प्रभु, तीन-तीन पद नाथ।
इनके श्री चरणाब्ज को, नमूँ नमाकर माथ।।2।।

वर्तमान में वीर प्रभु, शासनपति भगवान।
इनके शासन में हुये, बहु आचार्य महान।।3।।

मूल-संघ में कुंदकुंद, अन्वय सरस्वति गच्छ।
बलात्कार गण में हुए , सूरि नमूँ मन स्वच्छ।।4।।

सदी बीसवीं के प्रथम, गुरु दिगंबराचार्य।
चारित्र चक्रवर्ती श्री, शांतिसागराचार्य।।5।।

इनके शिष्योत्तम श्री, वीरसागराचार्य।
पहले पट्टाचार्य गुरु, नमूँ भक्ति उर धार्य।।6।।

वीर अब्द पच्चीस सौ, चालिस जगत्प्रसिद्ध।
पौष शुक्ल दशमी तिथी, हस्तिनापुर तीर्थ।।7।।

मैंने गणिनी ज्ञानमती, किया विधान प्रपूर्ण।
शांतिनाथ विधान यह, भरे सौख्य संपूर्ण।।8।।

जब तक जम्बूद्वीप की, कीर्ति जगत् में व्याप्त।
तब तक ''ज्ञानमती'' कृती, रहे विश्व विख्यात।।9।।

(इति सर्वविघ्नहर–श्रीशांतिनाथविधानं संपूर्ण ।)

वर्द्धतां जिनशासनं ।

हस्तिनापुर तीर्थ पूजा

स्थापना –गीता छंद

श्री शांति कुंथू अर जिनेश्वर, जन्म ले पावन किया।
दीक्षा ग्रहण कर तीर्थ यह, मुनिवृन्द मनभावन किया।।
निज ज्ञान ज्योती प्रकट कर, शिवमार्ग को प्रकटित किया।
इस हस्तिनापुर क्षेत्र को, मैं पूजहूँ हर्षित हिया।।1।।

ॐ ह्रीं हस्तिनापुरतीर्थक्षेत्रे गर्भ-जन्म-तपो-ज्ञान-कल्याणकधारकाः श्रीशांति-कुंथु-अरतीर्थंकराः! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं हस्तिनापुरतीर्थक्षेत्रे गर्भ-जन्म-तपो-ज्ञान-कल्याणकधारकाः श्रीशांति-कुंथु-अरतीर्थंकराः! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं हस्तिनापुरतीर्थक्षेत्रे गर्भ-जन्म-तपो-ज्ञान-कल्याणकधारकाः श्रीशांति-कुंथु-अरतीर्थंकराः! अत्र मम सन्निहितो भवत भवत वषट् सन्निधीकरणं।

–चामर छंद –

तीर्थ रूप शुद्ध स्वच्छ सिंधु नीर लाइये।
गर्भवास दुःखनाश तीर्थ को चढ़ाइये।।
हस्तिनागपुर पवित्र तीर्थ अर्चना करूँ।
तीर्थनाथ पाद की सदैव वंदना करूँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीशांति-कुंथु-अरतीर्थंकर-गर्भ-जन्म-तपो-ज्ञानकल्याणकपवित्र-हस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कुंकुमादि अष्ट गंध लेय तीर्थ पूजिये।
राग आग दाह नाश पूर्ण शांत हूजिये।।हस्तिनागपुर.।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीशांति-कुंथु-अरतीर्थंकर-गर्भ-जन्म-तपो-ज्ञानकल्याणकपवित्र-हस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्र तुल्य श्वेत शालि पुंज को रचाइये।
देह सौख्य छोड़ आत्म सौख्य पुंज पाइये।।हस्तिनागपुर.।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीशांति-कुंथु-अरतीर्थंकर-गर्भ-जन्म-तपो-ज्ञानकल्याणकपवित्र-हस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कुंद केतकी गुलाब वर्ण-वर्ण के लिए।
मार मल्लहारि तीर्थक्षेत्र को चढ़ा दिए।।
निज ज्ञान ज्योती प्रकट कर, शिवमार्ग को प्रकटित किया।
इस हस्तिनापुर क्षेत्र को, मैं पूजहूँ हर्षित हिया।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीशांति-कुंथु-अरतीर्थंकर-गर्भ-जन्म-तपो-ज्ञानकल्याणकपवित्र-हस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

खीर पूरिका इमर्तियाँ भराय थाल में।
तीर्थ क्षेत्र पूजते क्षुधा महा व्यथा हने।।हस्तिनागपुर.।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीशांति-कुंथु-अरतीर्थंकर-गर्भ-जन्म-तपो-ज्ञानकल्याणकपवित्र-हस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप में कपूर ज्योति अंधकार को हने।
आरती करंत अंतरंग ध्वांत को हने।।हस्तिनागपुर.।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीशांति-कुंथु-अरतीर्थंकर-गर्भ-जन्म-तपो-ज्ञानकल्याणकपवित्र-हस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप गंध लेय अग्निपात्र में जलाइये।
मोह कर्म भस्म को उड़ाय सौख्य पाइये।।हस्तिनागपुर.।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीशांति-कुंथु-अरतीर्थंकर-गर्भ-जन्म-तपो-ज्ञानकल्याणकपवित्र-हस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मातुलिंग आम्र सेव संतरा मंगाइये।
तीर्थ पूजते हि सिद्धि संपदा सुपाइये।।हस्तिनागपुर.।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीशांति-कुंथु-अरतीर्थंकर-गर्भ-जन्म-तपो-ज्ञानकल्याणकपवित्र-हस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीर गंध अक्षतादि अर्घ को बनाइये।
मुक्ति अंगना निमित्त तीर्थ को चढ़ाइये।।हस्तिनागपुर.।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीशांति-कुंथु-अरतीर्थंकर-गर्भ-जन्म-तपो-ज्ञानकल्याणकपवित्र-हस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा –

प्रासुक मिष्ट सुगंध जल, क्षीरोदधि सम श्वेत।
तीरथ पर धारा करूँ, तिहुँ जग शांती हेतु।।10।।

शांतये शांतिधारा।।

पारिजात के पुष्प से, पुष्पांजली करंत।
पावन तीर्थ महान यह, करे भवोदधि अंत।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।।

जयमाला

–दोहा –

समवसरण में राजते, ज्ञानज्योति से पूर्ण।
शांति-कुंथु-अर नाथ को, पूजत ही दुःख चूर्ण।।1।।

–शंभु छंद –

श्री आदिनाथ को सर्वप्रथम, इक्षूरस का आहार दिया।
श्रेयांस नृपति को, यहाँ तभी से, दानतीर्थ यह मान्य हुआ।।
देवों ने पंचाश्चर्य किया, रत्नों की वर्षा खूब हुई।
वैशाख सुदी अक्षय तृतिया, यह तिथि भी सब जग पूज्य हुई।।2।।
श्री शांति-कुंथु-अर तीर्थंकर, इन तीनों के इस तीरथ पर।
हुए गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान चार, कल्याणक इस ही भूतल पर।।
अगणित देवी देवों के संग, सौधर्म इंद्र तब आये थे।
अतिशय कल्याणक पूजा कर, भव-भव के पाप नशाये थे।।3।।
आचार्य अकंपन के संघ में, मुनि सात शतक जब आये थे।
उन पर बलि ने उपसर्ग किया, तब जन-जन मन अकुलाये थे।।
श्री विष्णुकुमार मुनीश्वर ने, उपसर्ग दूर कर रक्षा की।
रक्षाबंधन का पर्व चला, श्रावण सुदि पूनम की तिथि थी।।4।।
गंगा में गज को ग्राह ग्रसा, तब सुलोचना ने मंत्र जपा।
द्रौपदी सती का चीर बढ़ा, सतियों की प्रभु ने लाज रखा।।
श्रेयांस सोमप्रभ जयकुमार, आदीश्वर के गणधर होकर।
शिव गये अन्य नरपुंगव भी, पांडव भी हुए इसी भू पर।।5।।
राजा श्रेयांस ने स्वप्ने में, देखा था मेरु सुदर्शन को।
सो आज यहाँ इक सौ इक फुट, उत्तुंग सुमेरू बना अहो।।

यह जंबूद्वीप बना सुंदर, इसमें अठहत्तर जिनमंदिर।
इक सौ तेइस हैं देवभवन, उसमें भी जिनप्रतिमा मनहर।।6।।
जो भक्त भक्ति में हो विभोर, इस जम्बूद्वीप में आते हैं।
उत्तुङ्ग सुमेरू पर चढ़कर, जिन वंदन कर हर्षाते हैं।।
फिर सब जिनगृह को अर्घ चढ़ा, गुण गाते गद्‌गद हो जाते।
वे कर्म धूलि को दूर भगा, अतिशायी पुण्य कमा जाते।।7।।
श्री आदिनाथ भरतेश और, बाहूबलि तीन मूर्ति अनुपम।
श्री शांति कुंथु अर चक्रीश्वर, तीर्थंकर की मूर्ती निरुपम।।
वर कल्पवृक्ष महावीर प्रभू का, जिनमंदिर अतिशोभित है।
यह कमलाकार बना सुन्दर, इसमें जिनप्रतिमा राजित हैं।।8।।
श्री शांतिनाथ मंदिर-वृषभेश्वर मंदिर-वासुपूज्य मंदिर।
है तेरहद्वीप जिनालय एवं बना ''ॐ'' मंदिर सुन्दर।।
ग्रह की बाधा हरने वाला, नवग्रहशांती जिनमंदिर है।
इक सहस्र आठ प्रतिमाओं से युत, सहस्रकूट जिनमंदिर है।।9।।
है विद्यमान विंशति प्रतिमाओं, से संयुत मंदिर सुन्दर।
आदी तीर्थंकर ऋषभदेव का, कीर्तिस्तंभ बना मनहर।।
श्री शांति-कुंथु-अरनाथ प्रभू की, बड़ी-बड़ी प्रतिमाएँ हैं।
फिर तीनलोक रचना के, जिनबिम्बों को शीश झुकाऊँ मैं।।10।।
जय शांति कुंथु अर तीर्थेश्वर, जय इनके पंचकल्याणक की।
जय जय हस्तिनापुर तीर्थक्षेत्र, जय जय हो सम्मेदाचल की।।
जय जंबूद्वीप तेरहों द्वीप, नंदीश्वर के जिन भवनों की।
जय भीम, युधिष्ठिर, अर्जुन और सहदेव नकुल पांडव मुनि की।।11।।

ॐ ह्रीं श्रीशांति-कुंथु-अर-तीर्थंकर-गर्भ-जन्म-तपोज्ञानकल्याणकपवित्र-हस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।।

–दोहा –

तीर्थक्षेत्र की अर्चना, हरे सकल दुख दोष।
'ज्ञानमती' संपत्ति दे, भरे आत्मसुख कोष।।1।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

श्री शांतिनाथ भगवान की आरती

-आर्यिका चन्दनामती

आरति करो रे,
श्री शांतिनाथ सोलहवें जिन की आरति करो रे।।टेक.।।

प्रभु आरति से सब जन का, मिथ्यात्व तिमिर नश जाता है,
भव-भव के कल्मष धुलकर, सम्यक्त्व उजाला आता है,
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
श्री मोहमहामदनाशक प्रभु की आरति करो रे।।श्री शांति....।।1।।

प्रभु ने जन्म लिया जब भू पर, नरकों में भी शांति मिली।
ऐरादेवी के आंगन में, आनंद की इक लहर चली।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
जय विश्वसेन के प्रिय नन्दन की आरति करो रे।।श्री शांति.....।।2।।

शांतिनाथ निज चक्ररत्न से, षट्खंडाधिपती बने।
इस वैभव में शांति न लखकर, रत्नत्रय के धनी बने।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
श्री शांतिनाथ पंचम चक्री की आरति करो रे।।श्री शांति....।।3।।

जो प्रभु के दरबार में आता, इच्छित फल को पाता है।
आत्मशक्ति को विकसित कर, 'चंदनामती' शिव पाता है।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
मुक्ति श्री के अधिनायक प्रभु की आरति करो रे।।श्री शांति....।।4।।

हस्तिनापुर तीर्थ की आरती

-आर्यिका चन्दनामती

तर्ज–माई रे माई.............

हस्तिनागपुर तीरथ की हम, आरति करने आए।
आरति करते तीरथ की, निज अन्तर्मन खिल जाए।।
बोलो जय जय जय-2, प्रभू की जय, जय, जय।।टेक.।।

है इतिहास प्रसिद्ध तीर्थ यह, अतिप्राचीन सुपावन।
इस भूमी का वन्दन कर लो, अद्भुत है मनभावन।।
देवों द्वारा रची गई.....
देवों द्वारा रची गई, नगरी की महिमा गाएं।आरति.....।।1।।

वर्तमान के तीन तीर्थंकर, इसी धरा पर जन्में।
चक्रवर्ति अरु कामदेव तीनों पदवी से युत थे।।
तीन बार आ धनदराज ने...........
तीन बार आ धनदराज ने, रत्न बहुत बरसाए।।आरति.......।।2।।

प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव की, प्रथम पारणा भूमी।
दानतीर्थ का हुआ प्रवर्तन, धन्य हुई यह भूमी।।
अक्षय तृतिया पर्व आज भी...........
अक्षय तृतिया पर्व आज भी, वह इतिहास बताए।।आरति.......।।3।।

रक्षाबन्धन पर्व, महाभारत, की जुड़ी कहानी।
मनोवती की दर्श प्रतिज्ञा, शुरू यहीं से मानी।।
सति सुलोचना, रोहिणि रानी........
सति सुलोचना, रोहिणि रानी, की विख्यात कथाएं।।आरति.......।।4।।

गणिनी ज्ञानमती माताजी, नई चेतना लाईं।
स्वर्ग सरीखे जम्बूद्वीप से, विश्वप्रसिद्धि कराई।।
करे ''चन्दनामती'' वंदना........
करे ''चन्दनामती'' वंदना, ज्ञान ज्योति जग जाए।।आरति.......।।5।।

शांतिभक्ति

(पद्यानुवाद-गणिनी आर्यिका ज्ञानमती)

भगवन्! सब जन तव पद युग की, शरण प्रेम से नहिं आते।
उसमें हेतु विविधदुःखों से, भरित घोर भववारिधि है।।
अतिस्फुरित उग्र किरणों से, व्याप्त किया भूमंडल है।
ग्रीषम ऋतु रवि राग कराता, इंदुकिरण छाया जल में।।1।।

क्रुद्धसर्प आशीविष डसने, से विषाग्नियुत मानव जो।
विद्या औषध मंत्रित जल, हवनादिक से विष शांति हो।।
वैसे तव चरणाम्बुज युग, स्तोत्र पढ़े जो मनुज अहो।
तनु नाशक सब विघ्न शीघ्र, अति शांत हुये आश्चर्य अहो।।2।।

तपे श्रेष्ठ कनकाचल की, शोभा से अधिक कांतियुत देव।
तव पद प्रणमन करते जो, पीड़ा उनकी क्षय हो स्वयमेव।।
उदित रवी की स्फुट किरणों से, ताड़ित हो झट निकल भगे।
जैसे नाना प्राणी लोचन, द्युतिहर रात्री शीघ्र भगे।।3।।

त्रिभुवन जन सब जीत विजयि बन, अतिरौद्रात्मक मृत्युराज।
भव भव में संसारी जन के, सन्मुख धावे अति विकराल।।
किस विध कौन बचे जन इससे, काल उग्र दावानल से।
यदि तव पाद कमल की स्तुति, नदी बुझावे नहीं उसे।।4।।

लोकालोक निरन्तर व्यापी, ज्ञानमूर्तिमय शांति विभो।
नानारत्न जटित दण्डेयुत, रुचिर श्वेत छत्रत्रय हैं।।
तव चरणाम्बुज पूतगीत रव, से झट रोग पलायित हैं।
जैसे सिंह भयंकर गर्जन, सुन वन हस्ती भगते हैं।।5।।

दिव्यस्त्रीदृगसुन्दर विपुला, श्रीमेरू के चूड़ामणि।
तव भामंडल बाल दिवाकर, द्युतिहर सबको इष्टअति।।
अव्याबाध अचिंत्य अतुल, अनुपम शाश्वत जो सौख्य महान्।
तव चरणारविंदयुगलस्तुति, से ही हो वह प्राप्त निधान।।6।।

किरण प्रभायुत भास्कर भासित, करता उदित न हो जब तक।
पंकजवन नहिं खिलते निद्रा-भार धारते हैं तब तक।।

भगवन्! तव चरणद्वय का हो, नहीं प्रसादोदय जब तक।
सभी जीवगण प्रायः करके, महत् पाप धारें तब तक।।7।।

शांति जिनेश्वर शांतचित्त से, शांत्यर्थी बहु प्राणीगण।
तव पादाम्बुज का आश्रय ले, शांत हुये हैं पृथिवी पर।।
तव पदयुग की शांत्यष्टकयुत, संस्तुति करते भक्ती से।
मुझ भाक्तिक पर दृष्टि प्रसन्न, करो भगवन्! करुणा करके।।8।।

शशि सम निर्मल वक्त्र शांतिजिन, शीलगुण व्रत संयम पात्र।
नमूँ जिनोत्तम अंबुजदृग को, अष्टशतार्चित लक्षण गात्र।।9।।

चक्रधरों में पंचमचक्री, इन्द्र नरेन्द्र वृंद पूजित।
गण की शांति चहूँ षोडश, तीर्थंकर नमूँ शांतिकर नित।।10।।

तरुअशोक सुरपुष्पवृष्टि, दुंदुभि दिव्यध्वनि सिंहासन।
चमर छत्र भामंडल ये अठ, प्रातिहार्य प्रभु के मनहर।।11।।

उन भुवनार्चित शांतिकरं, शिर से प्रणमूँ शांति प्रभु को।
शांति करो सब गण को मुझको, पढ़ने वालों को भी हो।।12।।

मुकुटहारकुंडल रत्नों युत, इन्द्रगणों से जो अर्चित।
इन्द्रादिक से सुरगण से भी, पादपद्म जिनके संस्तुत।।
प्रवरवंश में जन्में जग के, दीपक वे जिन तीर्थंकर।
मुझको सतत् शांतिकर होवें, वे तीर्थेश्वर शांतीकर।।13।।

संपूजक प्रतिपालक जन, यतिवर सामान्य तपोधन को।
देशराष्ट्र पुर नृप के हेतू, हे भगवन्! तुम शांति करो।।14।।

सभी प्रजा में क्षेम नृपति, धार्मिक बलवान् जगत् में हो।
समय समय पर मेघवृष्टि हो, आधि व्याधि का भी क्षय हो।।
चौर मारि दुर्भिक्ष न क्षण भी, जग में जन पीड़ा कर हो।
नित ही सर्व सौख्यप्रद जिनवर, धर्मचक्र जयशील हो।।15।।

वे शुभद्रव्य क्षेत्र अरु काल, भाव वर्ते नित वृद्धि करें।
जिनके अनुग्रह सहित मुमुक्षु, रत्नत्रय को पूर्ण करें।।16।।

घातिकर्म विध्वंसक जिनवर, केलवज्ञानमयी भास्कर।
करें जगत में शांति सदा, वृषभादि जिनेश्वर तीर्थंकर।।17।।

—अंचलिका—

हे भगवन्! श्री शांतिभक्ति का, कायोत्सर्ग किया उसके।
आलोचन करने की इच्छा, करना चाहूँ मैं रुचि से।।
अष्टमहा प्रातिहार्य सहित जो पंचमहाकल्याणक युत।
चौंतिस अतिशय विशेष युत, बत्तिस देवेन्द्र मुकुट चर्चित।।
हलधर वासुदेव प्रतिचक्री, ऋषि मुनि यति अनगार सहित।
लाखों स्तुति के निलय वृषभ से, वीर प्रभू तक महापुरुष।।
मंगल महापुरुष तीर्थंकर, उन सबको शुभ भक्ती से।
नित्यकाल मैं अर्चूं पूजूँ, वंदूँ नमूँ महामुद से।।
दुःखों का क्षय कर्मों का क्षय, हो मम बोधिलाभ होवे।
सुगति गमन हो समाधिमरणं, मम जिनगुण संपति होवे।।

भजन

-आर्यिका चन्दनामती

तर्ज–धीरे-धीरे बोल कोई सुन ना ले......

शांतिनाथजी की जन्मभूमि को नमूँ,
भूमि को नमूँ, जन्मभूमि को नमूँ।।
हस्तिनापुरी शुभ धाम है, जहाँ जम्बूद्वीप महान है।।शांति.।।टेक.।।

माता ऐरावति को स्वप्न दिखे जहाँ,
विश्वसेन पितु दान किमिच्छक दें जहाँ।
धनकुबेर ने रत्नवृष्टि की थी जहाँ,
उत्सव करने इन्द्र स्वयं आये जहाँ।।
उस तीर्थ को, वन्दन करो-2,
हस्तिनापुरी शुभ धाम है, जहाँ जम्बूद्वीप महान है।।शांतिनाथ...।।1।।

ऐसे ही प्रभु कुंथु अरह के जन्म से,
इस नगरी के नर-नारी सब धन्य थे।
मात-पिता उनके भी सुर-नर वंद्य थे,
आत्मगुणों से जिनवर खुद अभिवंद्य थे।।
उस तीर्थ को, वंदन करो-2,
हस्तिनापुरी शुभ धाम है, जहाँ जम्बूद्वीप महान है।।शांतिनाथ...।।2।।

गणिनी माता ज्ञानमती की प्रेरणा,
पाकर तीरथ में आई नवचेतना।
धरती का यदि स्वर्ग तुम्हें है देखना,
इसकी छवि ''चंदनामती'' बस देखना।।
उस तीर्थ को, वंदन करो-2
हस्तिनापुरी शुभ धाम है, जहाँ जम्बूद्वीप महान है।।शांतिनाथ...।।3।।

भजन

-आर्यिका चन्दनामती

तर्ज–वह शक्ति......

हे विश्वशांति के उपदेष्टा, श्री शांतिनाथ प्रभु तुम्हें नमन।
हे धर्म अहिंसा के नेता, श्री शांतिनाथ प्रभु तुम्हें नमन।।टेक.।।

उपकार करूँ सारे जग का, यह भाव हृदय में आता है।
दुःखियों को देख हृदय रोता, मन करुणा से भर जाता है।।
दो शक्ति मुझे मैं सब जग का, दुख दूर कर सकूँ कभी स्वयं।
हे विश्वशांति के उपदेष्टा,
श्री शांतिनाथ प्रभु तुम्हें नमन।।1।।

भारत इक था गुलजार चमन, हिंसा ने उसको नष्ट किया।
सच्चाई के इस उपवन को, स्वार्थी तत्वों ने भ्रष्ट किया।।
ऐसी शक्ती हो प्रगट सभी में, विश्वशांति से करूँ चमन।
हे विश्वशांति के उपदेष्टा,
श्री शांतिनाथ प्रभु तुम्हें नमन।।2।।

भगवान न यदि बन सकूँ तो मैं, इंसान की श्रेणी पा जाऊँ।
यदि साधु नहीं बन सकूँ तो मैं, सज्जन की श्रेणी पा जाऊँ।।
है भाव यही 'चंदनामती', खिल जावे भारत का उपवन।
हे विश्वशांति के उपदेष्टा,
श्री शांतिनाथ प्रभु तुम्हें नमन।।3।।

भजन

-आर्यिका चन्दनामती

तर्ज –तू कितनी अच्छी........

तू कितनी निस्पृह है, तू कितनी निश्छल है, ज्ञानमति माता है।
ओ माँ.........ओ माँ.......
तेरी जो कृतियाँ हैं, अमर स्मृतियाँ हैं, सुरभि जगत्राता हैं।
ओ माँ.........ओ माँ.....।।टेक.।।

मन तेरा इतना चंचल है-2
तुम्हीं ने चंचलता वो, अपने मन की रोकी है
तू कितनी शीतल है, तू कितनी सुन्दर है, ज्ञानमति माता है।
ओ माँ.........ओ माँ.......।।1।।

अज्ञान तिमिर जो फैला है-2
तुम्हीं ने ज्ञानकिरण से निज पर को अवलोका है।
तू कितनी ज्ञानी है, तू कितनी ध्यानी है, ज्ञानमति माता है।
ओ माँ.........ओ माँ.......।।2।।

माँ ब्याही कन्या होती है-2
तुम्हारे सम दीक्षा लेकर, जग की माँ होती है
तू कितनी सच्ची है, तू कितनी भोली है, ज्ञानमति माता है।
ओ माँ.........ओ माँ.......।।3।।

सागर मोती सी शीतलता-2
तू ही गंगा सम औ पूर्णिमा सी तुझमें निर्मलता।
तू कितनी प्यारी है, तू जग से न्यारी है, ज्ञानमति माता है।
ओ माँ.........ओ माँ.......।।4।।